

हिमाचली अर्थव्यवस्था

इकाई I

भौगोलिक वातावरण-भौतिक संरचना, जलवायु, मिट्टी
प्राकृतिक साधन-वन, खनिज व शक्ति के साधन

अध्याय-6

अर्थव्यवस्था का आधार-भौगोलिक वातावरण

प्रस्तावना

किसी भी राज्य का आर्थिक विकास अवसंरचनाओं के विकास के अभाव में सम्भव नहीं है। ये सब संरचनायें अर्थ व्यवस्था को गतिशील व विकासशील बनाती हैं। अतः इनका विकास अर्थव्यवस्था के अनुकूल व अनुरूप होना चाहिए। कृषि, हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था का आधार है जो एक बड़ी सीमा तक राज्य के भौगोलिक वातावरण पर निर्भर करती है।

प्रकृति ने हिमाचल प्रदेश को बर्फ से ढकी हुई चोटियां, वर्ष भर बहने वाली नदियां, सुन्दर घाटियां, बहुमूल्य लकड़ी के वन, स्फूर्तिदायक व स्वास्थ्यवर्द्धक, जलवायु, शान्त-स्निग्ध-धूलमुक्त वातावरण तथा शान्तिप्रिय, ईमानदार, मजबूत व मेहनती व्यक्ति दिये हैं। दूसरे शब्दों में प्रकृति ने हमें वह सब कुछ दिया है जो इस भू-भाग को धनी व सम्पन्न बना सकता है। किन्तु विडम्बना यह है कि यहां के निवासी गरीबों का जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसा इसलिए है कि हम अवसंरचनाओं के अविकसित होने के कारण अपने प्राकृतिक साधनों का पूरा-पूरा उपयोग नहीं कर सके। अवसंरचनाओं का विकास भौगोलिक वातावरण की अवहेलना करके नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए पहाड़ी ढलानों पर रेल पथ या नहरों का निर्माण न्यूनतम है। स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था की अवसंरचनाओं के विकास पर विचार करने से पहले हमें हिमाचल प्रदेश के भौगोलिक वातावरण को समझना होगा।

भौगोलिक वातावरण

(अ) स्थिति व सीमायें

हिमाचल प्रदेश भूमध्य रेखा के उत्तर में $32^{\circ}-22'-40''$ और $33^{\circ}-12'-40''$ अक्षांश एवं $75^{\circ}-47'-55''$ से लेकर $79^{\circ}-04'-29''$ पूर्वी रेखाएं के बीच स्थित है। यह पश्चिमी हिमाचल पर्वत की शृंखलाओं में स्थित है। इस राज्य के उत्तर में जम्मू-कश्मीर, दक्षिण में उत्तर प्रदेश व हरियाणा का भाग, पूर्व में तिब्बत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा पश्चिम में पंजाब व हरियाणा राज्य के भाग शामिल हैं।

(ब) भौतिक संरचना

हिमाचल प्रदेश का धरातल पर्वत शृंखलाओं नदियों तथा घाटियों से युक्त पहाड़ी-भू-भाग है।

(अ) पर्वत शृंखलाएं

इस भू-भाग में पांच प्रमुख पर्वत शृंखलाएं हैं।

- (1) **जरकर** : यह शृंखला हिमाचल के पूर्व में है। यह हिमाचल व तिब्बत के बीच स्थित है। यह बहुत ऊंची पर्वत शृंखला है व बर्फ से ढकी है।
- (2) **वृहद हिमालय शृंखला** : यह लाहौर व स्पीति जिले को दो भागों में बांटती हुई कुल्लू व किन्नौर से गुजरती है। प्रायः सम्पूर्ण शृंखला बहुत ऊंची है व बर्फ से ढकी रहती है।
- (3) **पीर पंजाल** : यह शृंखला चम्बा जिले से प्रारम्भ होकर कुल्लू जिले में देव टिब्बा के समीप वृहद हिमालय शृंखला में मिल जाती है।
- (4) **धवलधार या धौलाधार** : यह शृंखला चम्बा, कांगड़ा, मण्डी, शिमला के बीच से गुजरती है। ऊंचे भाग बर्फ से ढके रहते हैं।
- (5) **शिवालिक** : यह शृंखला राज्य के पश्चिम में स्थित है। यह राज्य को पंजाब व हरियाणा से पृथक् करती है। इसकी ऊंचाई बहुत कम है। आबादी घनी है। इनके अलावा, हमीरपुर व ऊना में सोला सिंगी नामक एक छोटी व कम ऊंची शृंखला है।

(ब) नदियां

हिमाचल प्रदेश में वर्ष भर बहने वाली हिमपोषित पांच प्रमुख नदियां हैं।

- (1) **सतलुज** : यह तिब्बत से निकलकर किन्नौर, शिमला व बिलासपुर जिलों से गुजरती हुई पंजाब में चली जाती है। जल-विद्युत उत्पादन के विचार से यह राज्य की सबसे अधिक उपयोगी नदी है।
- (2) **व्यास** : यह कुल्लू जिले से निकल मंडी, हमीरपुर व कांगड़ा जिलों में से गुजरती हुई पंजाब में प्रवेश करती है। सिंचाई के विचार से यह सबसे अधिक उपयोगी नदी है।
- (3) **रावी** : यह नदी मुख्य रूप से चम्बा में बहती हुई जम्मू-कश्मीर में प्रवेश करती है।
- (4) **चिनाव या चन्द्रभागा** : यह नदी लाहौर से निकल कर चम्बा होती हुई जम्मू-कश्मीर राज्य में प्रवेश करती है।
- (5) **यमुना** : वैसे तो यमुना हिमाचल प्रदेश के दक्षिणी भाग से लगकर बहती है। परन्तु शिमला एवं सिरमौर जिले का बड़ा भाग यमुना का जल ग्रहण क्षेत्र है। पब्वर एवं गिरी नदियां इन भागों का जल लेकर यमुना में मिल जाती हैं।

(स) घाटियां

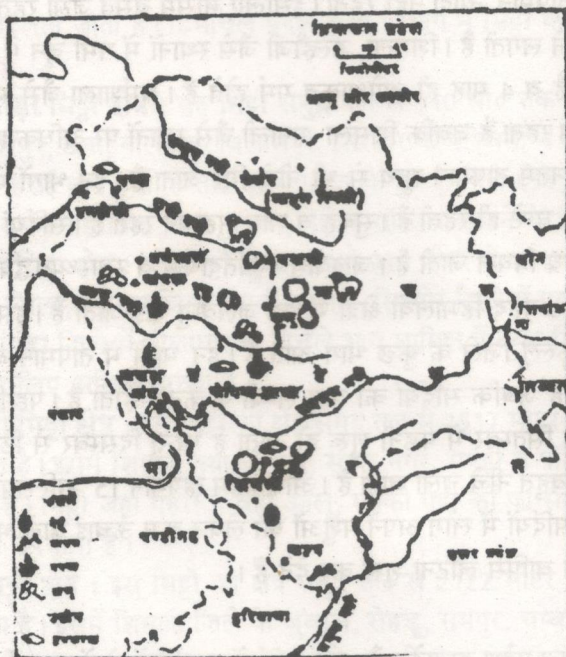
पर्वत शृंखलाओं के बीच बहुत-सी घाटियां हैं जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं।

- (1) **कांगड़ा-घाटी** : यह सबसे बड़ी घाटी है जो कांगड़ा जिले में धौलाधार के बीच से शुरू होकर कांगड़ा व हमीरपुर जिले में फैली हुई है। यह घाटी अन्न का भण्डार है।
- (2) **कुल्लू घाटी** : यह प्रसिद्ध जिले कुल्लू के पश्चिम में व्यास के साथ फैली है। ये मौसमी सब्जियों एवं फलों की पैदावार के लिए प्रसिद्ध है।
- (3) **वलह घाटी** : यह मण्डी जिले में स्थित सुन्दर नगर व सरका घाट उपमण्डल में फैली है। अन्न उत्पादन करने वाला मुख क्षेत्र है।
- (4) **दून** : यह घाटी सोलन जिले में है। नालागढ़ वरोटी वाला क्षेत्र इसी भाग में है।

(5) **वयारदादून** : यह सिरमौर जिले में है। गिरी नदी के साथ पश्चिमी भाग में अधिक विस्तृत है। नाहन व पांवटा इसी भाग में स्थित है।

(ब) जलवायु

जलवायु से अभिप्राय: किसी विशेष क्षेत्र की वर्षा व तापमान की दशाओं से होता है। थोड़े समय में इन दशाओं को मौसम के नाम से पुकारते हैं जबकि लम्बी अवधि में इन्हीं दशाओं को जलवायु कहते हैं। किसी भी क्षेत्र की कृषिगत पैदावार जलवायु पर निर्भर होती हैं।



भारत के सहासर्वेक्षक की अनुज्ञानुसार भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्र पर आधारित
© भारत सरकार का प्रतिलिप्यधिकार

(अ) तापमान

हिमाचल प्रदेश जलवायु के विचार से शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है, परन्तु समुद्र तल से ऊंचाई में भिन्नता के कारण तापमान में बहुत अधिक अन्तर पाया जाता है। समुद्र तल से जितनी अधिक ऊंचाई बढ़ती जाती है, तापमान कम होता जाता है। समुद्र से बहुत अधिक दूर होने के कारण जलवायु विषम है अर्थात् गर्मियों में अधिक गर्म व ऊंचे भाग हैं जैसे शिमला जिले में रामपुर या मण्डी व शिमला जिले के बीच कम ऊंचाई का बिलासपुर जिला। इन भागों में, उपोष्ण (Sub-tropical) जलवायु पाई जाती है। मध्यवर्ती ऊंचाई वाले भाग में शीतोष्ण जलवायु पाई जाती है। अधिक ऊंचाई वाले भागों में उपध्रुवीय जलवायु पाई जाती है।

जलवायु के भाग

(1) **उपोष्ण जलवायु** : यह जलवायु शिवालिक शृंखला में फैले प्रदेशों के अतिरिक्त हमीरपुर व बिलासपुर में भी पाई जाती है। यहां 6 मास गर्मी पड़ती है। अर्थात् 15 अप्रैल से 15 अक्टूबर तक गर्मी का

मौसम रहता है। 6 माह सर्दियां रहती हैं। तापमान जून में सर्वाधिक होता है व जनवरी में न्यूनतम होता है। दिन व रात के तापमान में भी काफी अन्तर होता है। बिलासपुर में अधिकतम तापमान लगभग 32° सेल्सियस रहता है जबकि न्यूनतम 4-5 डिग्री सेल्सियस रहता है। कभी-कभी यह 40° सेल्सियस को भी पार कर जाता है परन्तु ऐसा जलवायु ही है।

शीतोष्ण जलवायु : मध्यवर्ती हिमालय क्षेत्र में यह जलवायु पाई जाती है। चम्बा, धर्मशाला, पालमपुर, कुल्लू, सुन्दरनगर, सोलन, नाहन, पांवटा आदि क्षेत्रों में यही जलवायु पाई जाती है। इस भाग में अप्रैल व मई महीने में भी तापमान ज्यादा नहीं रहता। इसलिए मौसम बसंत जैसा रहता है। उधर सितम्बर के मध्य में सर्दी महसूस होने लगती है। शिमला, डल्हौजी जैसे स्थानों में गर्मी जून में भी मालूम होती है। करीब 8 माह सर्दी पड़ती है व 4 माह ही अपेक्षाकृत गर्म होते हैं। धर्मशाला जैसे स्थानों में अधिकतम तापमान 26°-27° सेल्सियस रहता है जबकि शिमला-मनाली जैसे स्थानों पर अधिकतम तापमान 20-22° सेल्सियस रहता है तथा न्यूनतम तापमान शून्य से भी नीचे गिर जाता है। इन भागों में बर्फ भी पड़ती है जिसमें दिन में भी गर्मी 2-3 घण्टे ही रहती है। सुबह व शाम सुहावने रहते हैं। सर्दियां यहां अधिक कठोर नहीं रहती तथा बर्फ भी शीघ्र पिघल जाती है। जलवायु स्फूर्तिदायक व स्वास्थ्यवर्द्धक है।

3. उपध्रुवीय जलवायु : वृहद् हिमालयी क्षेत्रों में यह जलवायु पाई जाती है। इसमें चम्बा की पांगी, लाहौर-स्पीति किनौर, व कुल्लू जिले के कुछ भाग आते हैं। इन भागों में तापमान बहुत कम रहता है। गर्मियां 2-3 माह ही रहती हैं जबकि सर्दियों की ऋतु लम्बी व कठोर होती है। पहाड़ियां वर्ष में 8 माह बर्फ से ढकी रहती हैं। बर्फ सितम्बर में पड़नी शुरू हो जाती है परन्तु दिसम्बर से टिकती है। सर्दियों में तापमान जमाव बिन्दु से भी बहुत नीचे चला जाता है। अधिकतम तापमान 15° सेल्सियस व न्यूनतम -25° सेल्सियस भी हो जाता है। सर्दियों में लोग अपने पशुओं को लेकर कम ऊंचाई वाले भागों में चले जाते हैं जबकि गर्मियां शुरू होते ही वापिस लौटना शुरू कर देते हैं।

(ब) वर्षा

वर्षा के विचार से हिमाचल प्रदेश तर प्रदेश है। वर्षा गर्मियों व सर्दियों दोनों ऋतुओं में होती है। गर्मियों में चिरापूँजी के बाद सर्वाधिक वर्षा हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में होती है सारे देश में यही ऐसा प्रदेश है जहां खाड़ी बंगाल का मानसून, अरब सागर का मानसून व शीत कालीन मानसूनी पवनें वर्षा करती हैं। धौलाधार अरब सागरीय मानसून पवनों को रोक लेता है। गर्मियों में तेज वर्षा होती है। अधिकांश वर्षा गर्मियों की ऋतु में होती है। सर्दियों की वर्षा हल्की-हल्की फुहारों में होती है जो गेहूं की फसल के लिए अमृत साबित होती है। बीच में चक्रवातीय पवनों से भी वर्षा होती है। गर्मियों में सर्वाधिक वर्षा जुलाई में होती है। जबकि सर्दियों में सर्वाधिक वर्षा जनवरी में होती है। मई व नवम्बर के महीने सर्वाधिक शुष्क होते हैं। अप्रैल में चक्रवात व जून में पूर्व-मानसून पवनें (pre-monsoon winds) वर्षा कर देती हैं। चम्बा व कांगड़ा जिलों में सर्वाधिक वर्षा होती है। मण्डी शिमला, सिरमौर में मध्यम वर्षा होती है। सबसे कम वर्षा लाहौर व स्पीति में होती है। मानसून लाहौर को पार करते-करते शुष्क हो जाता है यहां वृहद् हिमालय शृंखला इन पवनों को आगे नहीं बढ़ने देती इसी प्रकार यही शृंखला किनौर में भी मानसूनी पवनों को रोक लेती है। फलस्वरूप लाहौर स्पिति में व किन्नर में कुछ ठण्डे मरुस्थल हैं जहां वर्षा नाममात्र की ही होती है और प्राकृतिक वनस्पति भी नहीं होती।

(स) मिट्टी

कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था में मिट्टी का महत्वपूर्ण स्थान है। मिट्टी की संरचना एवं उसमें प्राप्त खनिज व लवणों के ऊपर ही विविध प्रकार की फसलों की पैदावार निर्भर करती है। हिमाचल प्रदेश में मिट्टी की तह मोटाई कम है। ढलानों पर अधिक मोटी तह रुक भी नहीं पाती, वृक्षों के कटाव, अत्याधिक चरान व वर्षा ने मिट्टी को बहा डाला है। जगह-जगह खाइयां व नालियां बन जाती हैं जो वैज्ञानिक ढंग से खेती में रुकावट डालती हैं। मिट्टी में पत्थर के छोटे बड़े टुकड़े मिले होते हैं। बीच-बीच में शिला खण्ड भी होते हैं। नदियों के किनारे रेत की मात्रा होती है व दोमट मिट्टी भी पाई जाती है। ऊंचाई बढ़ने के साथ-साथ मिट्टी की किस्म भी बदलती जाती है। हिमाचल प्रदेश कृषि विभाग ने मिट्टी को पांच भागों में बांटा है।

मिट्टी के प्रकार

(1) निचली पहाड़ी मिट्टी क्षेत्र : यह मिट्टी समुद्र तल से 910 मी० तक की ऊंचाई तक पाई जाती है। कांगड़ा घाटी, हमीरपुर, ऊना, नालागढ़, विलासपुर, सिरमौर के पश्चिमी व दक्षिणी भाग में यह मिट्टी पाई जाती है। इसकी गहराई कम होती है तथा इसमें पत्थर के टुकड़े मिले होते हैं। इस मिट्टी में वनस्पति तत्त्व पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं। यह मिट्टी चावल, गेहूं व सब्जियां उगाने के लिए उपयोगी है।

(2) मध्य पहाड़ी मिट्टी क्षेत्र : यह मिट्टी समुद्र तल से 910 मीटर से 1517 मीटर की ऊंचाई पर पाई जाती है। इसमें सोलन जिला, शिमला जिले में पूर्वी चौपाल, सिरमौर जिले में पूर्वी रेणुका का भाग, पांवटा घाटी का भाग तथा कांगड़ा जिले में धौलाधार के निचले भाग शामिल हैं। यह मिट्टी मक्की, गेहूं, तम्बाकू व चारे की फसलों के लिए अधिक अच्छी है।

(3) उच्च पहाड़ी मिट्टी क्षेत्र : इस मिट्टी का क्षेत्र समुद्र तल से 1517 मीटर से लेकर 2122 मीटर की ऊंचाई तक फैला हुआ है। इसमें शिमला तथा चौपाल, सुन्दर नगर, मण्डी व पश्चिमी रेणुका व धौलाधार के ऊंचे भाग शामिल हैं। मिट्टी जहां गहरी है वहां आलू, मक्की पैदा की जा सकती है। सेब के पौधों के लिए यह मिट्टी ज्यादा उपयोगी है।

(4) पर्वतीय मिट्टी क्षेत्र : इस मिट्टी का क्षेत्र समुद्र तल से 2122 मीटर से लेकर 3034 मी० की ऊंचाई तक फैला हुआ है। इसमें शिमला जिले के जुब्बल, रोहडू, रामपुर, चम्बा जिले में चम्बा, भरमौर, चुराह के भाग, दक्षिणी कुल्लू व पालमपुर उपमण्डल के ऊपरी भाग शामिल हैं। कृषि की पैदावार की तुलना में फलों की पैदावार के लिए अधिक अच्छी है।

(5) सूखी पहाड़ी मिट्टी क्षेत्र : यह मिट्टी समुद्र तल से 3034 मीटर से अधिक ऊंची पर पाई जाती है। उसमें किन्नौर, लाहौल-स्पिति, कुल्लू व पांगी के क्षेत्र शामिल हैं। पानी व गर्मी की कमी से वनस्पति तत्त्व गल-सड़कर मिट्टी नहीं बन पाते। अतः मिट्टी कम उपजाऊ है। इसमें घास व जड़ी-बूटियां पैदा होती हैं। कुछ भाग सेब, बादाम, अंगूर के बागान व आलू की पैदावार के लिए उपयुक्त हैं। जैतून, चिकरी व हाप्स की खेती शुरू की गई है।

भौगोलिक वातावरण का आर्थिक महत्व

हिमाचल प्रदेश के भौगोलिक वातावरण का अपना अलग आर्थिक महत्व है।

1. हिमाचल प्रदेश एक पहाड़ी एवं ठण्डा प्रदेश है। अतः समीपवर्ती मैदान एवं गर्म भाग के लोग यहां की ठण्डी हवा, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य व बर्फ का आनन्द लेने हेतु राज्य में आते हैं। ये सभी बातें पर्यटन को प्रोत्साहन देती हैं।
2. हिमाचल प्रदेश की बे-मौसमी सब्जियां, पंजाब-हरियाणा व दिल्ली के बाजारों में खूब बिकती है।

3. अपनी विशिष्ट बनावट व जलवायु के कारण यह भाग फलों का प्याजा बनता जा रहा है। सेब, आड़ू, पलम आदि फल यहां से देश के विभिन्न बाजारों में जाते हैं।
4. हिमाचल की हिम पोषित नदियों में बर्फ भर पानी रहता है। इनकी जलविद्युत क्षमता 2 करोड़ कि.वा. है जो सारे उत्तरी भारत की बिजली की आवश्यकता को पूरा कर सकती है। अब इस क्षमता का उपयोग किया जा रहा है।
5. पर्वतों की ढलानों पर बहुमूल्य लकड़ी के वन हैं। घास पशु-पालन को बढ़ावा देती है। संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि हिमाचल प्रदेश की आर्थिक उन्नति का आधार जल-विद्युत क्षमता का दोहन, पर्यटन व बागवानी का विस्तार है।

अभ्यास-प्रश्न

(अ) निबन्धात्मक प्रश्न

- (1) जलवायु के विचार से हिमाचल प्रदेश को कितने भागों में बांटा जा सकता है। प्रत्येक का वर्णन करो।
- (2) हिमाचल प्रदेश की विभिन्न प्रकार की मिट्टियों का वर्णन करो।
- (3) हिमाचल प्रदेश के वर्षा पर एक नोट लिखो।
- (4) हिमाचल के भौगोलिक वातावरण का आर्थिक महत्त्व बताओ।

(ब) लघु उत्तर प्रश्न

1. हिमाचल की पर्वत शृंखलाओं का वर्णन करो।
2. हिमाचल की मुख्य नदियों के नाम बताओ।
3. हिमाचल की प्रमुख घाटियों का वर्णन करो।
4. हिमाचल की पर्वत शृंखलाओं के नाम लिखो।
5. हिमाचल में कौन-कौन सी प्रमुख घाटियां हैं।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो :

- (1) गर्मियों में सर्वाधिक वर्षा मास में होती है।
- (2) गिरि-वाटा नदी नदी में मिलती है।
- (3) मध्य पहाड़ी मिट्टी में कम है।
- (4) सूखी पहाड़ी मिट्टी जिले में पाई जाती है।

सही (✓) व गलत (×) के चिन्ह लगाओ ॥

- (1) निचली मिट्टी क्षेत्र शिमला व कुल्लू में है।
- (2) पर्वतीय मिट्टी क्षेत्र फलों की पैदावार के लिए अधिक अनुकूल है।
- (3) हिमाचल में सर्वाधिक वर्षा धर्मशाला में होती है।
- (4) उप-ध्रुवीय जलवायु में बर्फ बहुत कम पड़ती है।
- (5) शिवालिका शृंखला क्षेत्र में आबादी घनी बसी है।

